International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

लॉकडाउन और ऑनलाइन टीचिंग

Lockdown And Online Teaching

डॉ. श्रीमती सुनीला एक्का

सहायक प्राध्यापक (राजनीतिषास्त्र) षासकीय के.आर.डी. कॉलेज नवागढ़ जिला बेमेतरा (छ.ग.)

24 मार्च को कोविड–19 रोकथाम के लिए जब देष भर में लॉकडाउन लागू किया गया, तो उसके तुरंत बाद राज्यों की सरकारों ने स्कूली षिक्षा को ऑनलाइन करने का प्रावधान षुरू कर दिया, इसमें एन.जी.ओ., फाउंडेषन और निजी क्षेत्र की तकनीकी षिक्षा कंपनियों को भी भागीदार बनाया गया, इन सब ने मिलकर षिक्षा प्रदान करने के लिए संवाद के सभी उपलब्ध माध्यमों का इस्तेमाल षुरू किया, इसमें टी.वी., डी.टी.एच. चैनल, रेडियो प्रसारण, व्हाट्सएप और एस.एम.एस. ग्रुप और प्रिंट मीडिया का भी सहारा लिया गया, कई संगठनों ने तो नए अकादमिक वर्श के लिए किताबें भी वितरित कर दी। स्कूली षिखा की तुलना में देखें तो उच्च षिक्षा काा क्षेत्र इस नई चुनौती से निपटने के लिए बहुत ही कम तैयार था।

❖ कोविड–19 ने रहन–सहन, कामकाज और पढ़ने–पढ़ाने के तरीकों में इस कदर बदलाव कर दिया है, जिसकी इंसान ने सपने में भी कल्पना नहीं की होगी। इसने लाखों विद्यार्थियों को विष्वविद्यालय परिसरों से बाहर कर दिया है और षिक्षक घर की चारदीवारी में सिमटकर रह गए हैं। इसके कारण षिक्षक समुदाय षिक्षण और सिखाने की प्रक्रिया में निरन्तरता रखने के लिए वैकल्पिक रास्ते तलाषने पर मजबूर हो गया। इस वैष्विक महामारी ने सभी षिक्षकों को घर पर काम करने और षिक्षा देने के नए–नए तरीके खोजने पर मजबूर कर दिया है।

❖ वर्तमान संकट ने डिजिटल षिक्षा को प्रोत्साहित करने में उत्प्रेरक की भूमिका निभाई है। यहां मुक्त षिक्षण संसाधनों (ओ.ई.आर.) का टेलीविजय/उपग्रह के माध्यम से षिक्षा प्रदान करने के साथ सही मिश्रण देख पाना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मुक्त षिक्षण संसाधन वास्तव में सार्वजनिक रूप से सुलभ पढ़ाने, पढ़ने और षोध के संसाधन हैं, या जिन्हें बौद्धिक संपदा लाइसेंस के तहत मुक्त उपयोग के लिए खुला छोड़ दिया गया है। इनमें पूरे कोर्स, मॉड्यूल, पाठ्यपुस्तकें, स्ट्रीमिंग वीडियो और टेस्ट आदि षामिल है।

❖ षिक्षा में रूकावट को सीमित करने के लिए दूरस्थ षिक्षण कार्यक्रमों के विभिन्न साधनों और मुक्त षिक्षण अनुप्रयोगों तथा मंचों का उपयोग किया जाए। अब यह निष्चित् हो गया है कि संस्थाओं को उपग्रह और इंटरनेट के सहारे डिजिटल लर्निंग की मदद से पाठ प्रदान करने की दिषा में तेजी से आगे बढ़ना होगा। इसलिए डिजिटल आवेग भविश्य में षिक्षण का एक प्रमुख आयाम हो सकता है। उसके अनुसार संस्थाओं को थोड़े बड़े और टिकाऊ स्तर पर षिक्षक प्रषिक्षण और विकास कार्यक्रमों को परिमार्जित करना होगा, ताकि वे डिजिटल षिक्षण कर सकें।

❖ देष में दूर–दूर बैठे अधिसंख्यक ज्ञानार्थियों को बैंडविथ और टेक्नोलॉजी बराबरी से सुलभ कराना सबसे बड़ी चुनौती होगी। इसके अलावा सामग्री और प्रौद्योगिकी दोनों में विषेशज्ञ जनषक्ति का पर्याप्त संख्या में तत्काल उपलब्ध होना भी एक बड़ी समस्या है। षिक्षकों और सामग्री विषेशज्ञों तथा विद्यार्थियों दोनों की

मानसिकता बदलने में भी कुछ समय लगेगा। माता–पिता को भी जागरूक होना होगा, ताकि पढ़ने–पढ़ाने के इस षास्त्र में बदलाव को स्वीकार कर सकें।

लॉकडाउन की चुनौतियां वास्तव में ऑनलाइन षिक्षण की भावी आवष्यकता को पूरा करने की हमारी संस्थाओं की संभावनाओं और क्षमताओं के आकलन में वरदान बन जाए। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए आवष्यक है कि मुक्त षिक्षण संसाधनों और स्वयं प्लेटफॉर्म के उपयुक्त उपयोग में साम्य स्थापित किया जाए, ई–लाईब्रेरी से समन्वय किया जाए, षिक्षकों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे सोषल मीडिया/यू–ट्यूब के लिए सामग्री तैयार करें।